हमें चाँद चाहिए

मित्रों, एक वो भी दिन हुआ करते थे जब हमारे तीन में से दो रॉकेट बंगाल की खाड़ी में समा जाते थे । गुरूवर स्व0 शरद जोशीजी ने ऐसी ही किसी असफल रॉकेट की उड़ान पर एक करारा व्यंग्य लिखा था "प्रतिदिन/शुंई, फुस्स, बिझुंग" । इस व्यंग्य की कुछ लाईनें मैं नीचे दे रहा हूँ ।

"जब वे उलटी गिनती गिन रहे थे वे नहीं जानते थे कि यह उलटी धड़कन चल रही है । रॉकेट उठा, और उठा, और एकाएक जात पर आ गया अर्थात घूमा और करोड़ों खर्च करने वालों की इज्जत पर, पूरे आसमान पर झाड़ू फेरता समुद्र की गहराई में किसी सरकारी रहस्य की तरह समा गया । शुंई, फुस्स, बिझुंग, गुडुप, झीं, भाम । गया पानी में । जो नारंगी प्रकाश था वह बुझने के पहले दीये की लौ का था । अफसोस की क्वान्टिटी इसलिये ज़्यादा है कि दीया भी बड़ा खर्चीला था और प्रकाश भी कम न था । अफसोस करने के लिये आपको कम से कम मेट्रिक पास होना चाहिए । अच्छा तो यह हो कि यह अफसोस चूंकि टेकनालॉजी से संबंधित है, इसलिये केवल अंग्रेजी में किया जाये । जो लोग रॉकेट गिरने का अफसोस हिंदी, मलयाली, या कन्नड़ में कर रहे हैं वह कोई राष्ट्र का हित नहीं कर रहे हैं ।"

शरद जी को तो मौका चाहिए था । उन्होंने एक उम्दा व्यंग्य ठोंक दिया । ठीक भी है, हम व्यंग्यकार हमेशा मौके की तलाश में रहते ही हैं । लेकिन जब मैंने उनका यह व्यंग्य उनके व्यंग्य संकलन "जादू की सरकार" में पढ़ा तो मुझे कुछ अच्छा नहीं लगा । अमेरिका, रूस, जापान, यूरोपीय देश और चीन आज अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के जिस पहाड़ पर खड़े हैं उनमें उनकी असफलतायें भी शामिल हैं । अमेरिका और सोवियत यूनियन के कई अभियानों में तो कईयों एस्ट्रोनाट्स को अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ा था । इन्हीं असफलताओं की कतार में भारत की महान बेटी कल्पना चावला भी शहीद हुयी थी । लेकिन भारत की एक और महान बेटी सुनिता विलियम्स के नाम अंतरिक्ष में सबसे ज़्यादा समय तक रहने का विश्व रिकार्ड भी है ।

वो भी दिन हुआ करते थे जब इसरो के रॉकेट दीपावली के रॉकेट का मजा दिया करते थे । हमारे बहुत से अंतरिक्ष अभियान अगर बंगाल की खाड़ी में डूबे हैं तो आज भारत दुनिया में सबसे ज़्यादा किफायती ढंग से अंतरिक्ष अभियानों को संचालित करने वाला एक मात्र देश भी है । असफलतायें भी मंजिल तक पहुंचने का एक ज़रिया हुआ करती हैं । सन 2006 इसरो के लिए फिर बुरा साबित हुआ था । हमारा स्वदेशी प्रक्षेपण यान जी. एस. एल. वी. – एफ 02 असफल साबित हुआ था और इनसैट 4बी को बंगाल की खाड़ी में जल समाधि लेनी पड़ी थी । इसके अलावा 2006 में ही हमारी इन्टर कॉन्टीनेन्टल ब्लास्टिक मिसाईल अग्नि 4 भी असफल हो गई थी । लेकिन सन 2007 में हमने ये कमी भी पूरी कर दी । स्वदेशी जी. एस. एल. वी. प्रक्षेपण यान ने इन्सेट 4 सी आर को अपनी कक्षा में सटीक पहुंचाया और अग्नि 4 ने भी 3500 किमी दूर अपने लक्ष्य को भेद दिया था । अग्नि 4 की मारक क्षमता 5000 किमी तक बढ़ाई जा सकती है । इस मिसाईल की सफलता से शंघाई को थोड़ी हरारत महसूस हुयी थी ।

मित्रों, 22 अक्टूबर 2008 वाकई हमारे लिए महान गर्व का दिन है । पी. एस. एल. वी. – सी. 11 हमारा ऐतिहासिक और अब तक का सबसे सफल प्रक्षेपक यान साबित हुआ है । अगर सब कुछ ठीक रहा तो अमेरिका, रूस और जापान के बाद भारत दुनिया का चौथा देश बन जायेगा चांद पर अपना झंडा फहराने वाला । इसरो इस अभियान की सफलता के बाद 2009 –2010 में चन्द्रयान –2 भेजेगा । सन 2015 तक चांद पर हम भारतीयों के कदम भी पड़ जायेगें । और 2010 से हमारा मंगल के लिए भी अभियान शुरू हो जायेगा ।

मित्रों, वो दिन भी हमने देखे हैं जब अमेरिका ने रूस को कड़ी चेतावनी दी थी कि वह भारत को जी. एस. एल. वी. इंजन और इसकी तकनीकी न दे । आज हमारे पास खुद का बनाया हुआ जी. एव. एल. वी. इंजन है । सुपर कंप्यूटर के नाम पर भी अमेरिका ने हमको ठेंगा दिखा दिया था । आज हमारे पास दुनिया का चौथा सबसे बड़ा सुपर कंप्यूटर 'एका' है । न्यूक्लियर डील पर भले ही मनमोहन सरकार ने एक तरह से सी.टी.बी.टी. पर साईन कर दिया है क्यूंकि अमेरिका शुरू से ही कह रहा है कि हम यूरेनियम को पुनर्शोधित करने की तकनीकि और अनुमति नहीं देंगें, और न ही किसी दूसरे देश को देने देंगें और परमाणु परीक्षण किया तो डील नो डील हो जायेगी, और सारी तकनीकी, न्यूक्लियर रियेक्टर और यूरेनियम हम वापस ले लेंगें, लेकिन मात्र पार्टी के मौद्रिक हित के लिए मनमोहन सरकार ने ये पक्षपाती डील कर डाली । जाहिर है इस डील से इतनी बड़ी मात्रा में पैसा आ रहा है कि कांग्रेस ऐसी 10 सरकारें इस डील पर कुरबान कर दे । कुछ जूठन सपा के भी हिस्से में भी आ गई । अमर सिंह कहाँ चूकने वाले थे । सांसदों की जम कर खरीद फरोख्त हुई । रेवती रमण सिंह का वीडियो बहुत कुछ कहता है । अब जब कुछ होना ही नहीं है तो रोने से क्या फायदा ।

मित्रों, चन्द्रयान -1 की सफलता का श्रेय सिर्फ हमारे महान वैज्ञानिकों को जाता है । कुछ समय पहले तक असंभव लगने वाले इस अभियान को उन्होंने संभव बनाया और दुनिया को भारत की तकनीकी ताकत का एहसास भी करवाया । इस अभियान पर पूरे विश्व की निगाहें लगी हैं, क्यूंकि अभी कुछ समय तक चांद किसी भी देश के अंतरिक्ष अभियान की सूची में नहीं है इसलिए इस अभियान से मिलने वाले आंकड़े सभी के लिए महत्वपूर्ण हैं । चांद का नक्शा बनाना, धुवों पर बर्फ की खोज और सबसे महत्वपूर्ण हीलियम -3 के बारे में जानकारी जुटाना चन्द्रयान -1 का मुख्य मकसद है ।

देश को राजनीतिक मोर्चों पर पराजय का मुंह हमारे प्रातःस्मरणीय राजनेताओं के कारण देखना पड़ता है । इनका समस्त किया धरा सवेरे-सवेरे अखबार में पढ़ कर सारा दिन खराब गुजरता है, लेकिन ये हमारे महान वैज्ञानिक हैं जिनकी वजह से हमें विश्व के सामने सिर उठा कर यह बताने का मौका मिलता है कि हम भारतवासी भी विज्ञान और तकनीकी के मामले में किसी से कम नहीं हैं । हमें दबाने की चाहे कितनी साजिशें करलो, लेकिन एक दिन हम तुम्हें अपना लोहा मनवा कर ही दम लेंगें ।